B.A. PART-1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास (मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य)
आधुनिक काल
शेषभाग-2

प्रश्न :- आधुनिक काल की परिस्थितियाँ बताइये ?

उत्तर : शेषभाग :-

युगीन परिवेश :-

आधुनिककालीन साहित्य के स्वरूप-निर्धारण में जो युगीन पृष्ठभूमि का योगदान रहा है, उसका विश्लेषण एक स्वतन्त्र ग्रन्थ का विषय है। आदिकालीन और मध्यकालीन साहित्य की युगीन पृष्ठभूमि इस प्रकार से सीधी और स्पष्ट रही है। धार्मिक और राजनैतिक पृष्ठभूमि में जितना योगदान राजनैतिक गतिविधियों का रहा है, उससे अधिक सांस्कृतिक और वैचारिक गतिविधियों का रहा है। यही कारण है कि आधुनिक-काल में प्रायः पाँच-दस साल के अन्तराल से साहित्य में एक नया दृष्टिकोण विकसित होता हुआ दिखाई देता है। इन विभिन्न साहित्यिक दृष्टिकोणों के निर्माण में अपने युग की सामाजिक-राजनैतिक पृष्ठभूमि के साथ देश-विदेश में उद्भूत विभिन्न विचार-विशेष का भी महत्वपूर्ण योग रहता है। कभी युगीन सामाजिक-राजनैतिक परिवेश के अनुरूप बाह्य-विचार विशेष को अपनाया गया उसमें दिखाई देता है, तो कभी बाह्य-विचार विशेष युगीन परिवेश से नितान्त विसंगत रूप में अपनाया गया प्रतीत होता है। आधुनिक काव्य और गद्य की विभिन्न प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते समय इन विसंगतियों के प्रति संकेत अवश्य किया जायेगा। यहाँ आधुनिक साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों के निर्माण में सहायक प्रमुख युगीन परिवेश की संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत है—

राजनैतिक परिवेश :-

आधुनिक-काल के राजनैतिक परिवेश को दो भागों में विभाजित करके विश्लेषित किया जाना चाहिए—

(1) पराधीन भारत का राजनैतिक परिवेश और (2) स्वाधीन भारत का प्रजातन्त्रीय राजनैतिक परिवेश

1. परधीन भारत का राजनैतिक परिवेश :-

वैसे तो मध्य-काल में तुर्कों तथा मुगलों के शासन-काल में भारत पराधीन ही था, लेकिन अँग्रेजों के शासन-काल और मुगलों के शासन-काल की पराधीनता में पर्याप्त अन्तर है। मुगल शासक कुछ सीमा तक भारतीय बनकर राज किया करते थे, किन्तु अँग्रेज अन्त तक अपने आप को अँग्रेज ही बनाये रखने के लिए प्रयासरत रहे। वे एक साथ भारत के 'शासक' और 'व्यापारी' बने रहे। इनमें यशलिप्सा, धनलिप्सा और अहं या श्रेष्ठता की लिप्सा सदा बनी रही, जिसके परिणामस्वरूप देशवासियों के जीवन का हर क्षेत्र इनके शोषण का शिकार रहा। सन् 1757 में अँग्रेजों ने बंगाल जीत लिया था, तदुपरान्त वे धीरे-धीरे देश के अन्य क्षेत्रों पर अपना अधिकार करते चले गये। वारेन हेस्टिंग्स और वैलेजली ने अँग्रेजी सत्ता का विस्तार किया। उन्नीसवीं शती के पूर्वार्ध में हिन्दुस्तान के अधिकांश भाग पर अँग्रेजी सत्ता का निरंकुश शासन स्थापित हुआ। इसके साथ ही अँग्रेजी शासकों ने सुधार के नाम पर एक ओर भारतीय सम्पदा की मनमानी लूट और संस्कृति का विध्वंस करना आरम्भ किया, तो दूसरी ओर छोटे-छोटे देशी राजाओं को किसी न किसी बहाने से अधिकृत उनके राज्यों को हड़पकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया। विजित प्रदेशों पर अपने ढंग की शासन-व्यवस्था तथा अर्थ-व्यवस्था लागू की जाने लगी।

वारेन हेस्टिंग्स के द्वारा किये गये सुधारों का व्यापक प्रभाव यहाँ के निवासियों पर धार्मिक-सांस्कृतिक आघात के रूप में हुआ। लार्ड डलहौजी की नीति के कारण सतारा, झाँसी, नागपुर, जयपुर आदि देशी रियासतों को बेदखल किया गया। अँग्रेजी शासकों की भारतवासियों के प्रति भेद-भाव की यह नीति निरन्तर बढ़ती गयी जिसके फलस्वरूप राजाओं,

नवाबों तथा साधारण आदमी के मन में भी अँग्रेजों के प्रति असन्तोष का भाव उठने लगा। सन् 1857 में यही असन्तोष पहली बार स्वतंत्रता-संघर्ष के रूप में फूट पड़ा। यह केवल सिपाहियों का विद्रोह नहीं था और न कुछ अपदस्थ देशी राजाओं-नवाबों का सिंहासन-प्राप्ति का प्रयास था, अपितु स्वाधीनता की चेतना की वह चिंगारी थी, जो हिन्दुस्तानी लोगों के मन में जाग्रत हो उठी थी। देशी राजाओं की अबलरवादिता और अँग्रेजों की निरंकुश सत्ता के समन्वित प्रयास से यद्यपि यह चिंगारी दब गयी, किन्तु बुझी नहीं। सन् 1857 से लेकर 1947 तक का इतिहास इसी चिंगारी से भड़कने का इतिहास है। सन् 1857 के स्वतंत्रता-संग्राम के बाद भारत में इंगलैंड की महारानी विक्टोरिया का शासन-काल आया। इसमें अनेक प्रकार की सान्त्वनामयी घोषणाएँ की गयीं। जैसे धर्म के क्षेत्र में हस्तक्षेप न करने की नीति, देशी रियासतों एवं राज्यों को अपदस्थ न करने की नीति और भारत में शान्ति-सुव्यवस्था की अनेक चिकनी-चुपड़ी बातें, इसमें सम्मिलित थीं। भारतेन्दु युगीन साहित्यकार कुछ समय तक इसी सम्मोहन से प्रभावित रहा, किन्तु धीरे-धीरे विक्टोरिया शासन-काल की वास्तविकता सामने आने लगी।

सन् 1885 में स्थापित काँग्रेस के मनीषियों ने पहले तो शासन-व्यवस्था में सुधार की विनम्रता से माँग की, लेकिन बाल गंगाधर तिलक के प्रवेश के साथ काँग्रेस स्वाधीन संस्था के रूप में परिवर्तित हो गयी। सन् 1905 में अँग्रेजों ने बंग-भंग (बंगाल का विभाजन) कानून पास किया, जिससे स्वाधीनता की भावना और भी तीव्र हो गयी और भीतर ही भीतर अँग्रेजों का तख्ता पलट देने के लिए क्रान्तिकारी संस्थाओं का निर्माण और विकास होने लगा। इन संस्थाओं में सक्रिय-रूप से भाग लेने वाले में तिलक, हरदयाल, अरविन्द घोष, रास

बिहारी घोष, यतीन्द्र नाथ, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु आदि देशभक्त थे। स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रत्येक प्रयास को कुचलने का कुचक्र अँग्रेजों ने आरम्भ किया। सन् 1914 में प्रथम विश्व-युद्ध छिड़ गया। भारतीय नेताओं को सब्ज-बाग दिखाकर अँग्रेजों ने इस युद्ध में भारतीयों का सक्रिय सहयोग प्राप्त किया और युद्ध-समाप्ति के बाद उपहार के रूप में 1919 ई० का रौलेट एक्ट पास किया। इस एक्ट के अनुसार पुलिस और कार्यकारिणी को अपरिमित अधिकार दे दिये गये और नागरिक स्वतंत्रता को निरर्थक बना दिया गया। परिणामस्वरूप रौलेट एक्ट का विरोध करने के लिए देश के अनेक स्थानों पर आन्दोलन उग्र से उग्रतर स्वरूप धारण करने लगे, साथ ही अँग्रेजों की निर्मम गोलियों की बौछार भी उग्र होने लगी। इसी समय महात्मा गाँधी ने अँग्रेजी शासन के विरुद्ध हड़ताल घोषित की। इसी एक्ट का विरोध करने के लिए अमृतसर के जालियाँवाला बाग में चल रही सभा पर जनरल डायर ने निर्ममता के साथ गोलियों की बौछार करायी। वहाँ 20,000 लोग थे, उनमें से अधिकांश लोग गोलियों के शिकार हुए और कुछ भगदड़ में दबकर तथा कुछ कुएँ में गिरकर जान गँवा बैठे। बाद में जाँच का नाटक खेला गया और अँग्रेजी शासन द्वारा जनरल डायर का ही समर्थन किया गया। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में स्वाधीनता आन्दोलन अँग्रेजों के निर्मम-नृशंस-कारनामों के होते हुए भी पूरे देश में फैलता गया।

इसी बीच अँग्रेजों ने हिन्दू-मुस्लिमों में साम्प्रदायिकता के बीज बोये, जिसके फलस्वरूप मुस्लिम लीग की स्थापना हुई, जिसने अनेक साम्प्रदायिक दंगे कराये। गाँधीजी का कुशल नेतृत्व, भारतवासियों की सतत् सक्रिय देशभक्ति और ज्ञात-अज्ञात शहीदों की शहादत के कारण 15 अगस्त, सन् 1947 को हिन्दुस्तान (भारत)

स्वतंत्र हुआ, लेकिन टुकड़ों (भारत और पाकिस्तान) में बँटा। 'देश विभाजन' में केवल धरती का विभाजन नहीं हुआ, अपितु आम आदमी के हृदयों का भी बँटवारा हुआ। विभाजन के समय हुए साम्प्रदायिक दंगों ने हिन्दू-मुस्लिम दोनों को एक दूसरे का ऐसा शत्रु बना दिया कि सत्तारूढ़ काँग्रेस द्वारा धर्मनिरपेक्षता अपनाने पर भी आज दोनों के साम्प्रदायिक दृष्टिकोण में अधिक अंतर नहीं है। इस विभाजन ने मात्र महात्मा गाँधी की हत्या नहीं की, अपितु हिन्दू-मुस्लिम भाईचारे की भी हत्या की है। आज भी आये दिन होने वाले साम्प्रदायिक दंगे इस बात के प्रमाण हैं।

(शेष बचा है।)

पता:
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
दिनांक - 04 . 09 . 2023
मो० न० - 7909046087